कला कोलकाता

सम्मुख

प्रयाग शुक्ल

इस बार की कोलकाता यात्रा में कुछ नई कला दीर्घाओं को देखने का अवसर मिला। और कुछ पुरानी कला दीर्घाओं में चल रही नई प्रदर्शनियों में भी जा सका। कोलकाता में फरवरी के आखिरी सप्ताह में पहुंचा। 'सीमा' (सेंटर फॉर इंटरनेशनल मॉडर्न आर्ट) में जोगेन चौधरी की एक बड़ी प्रदर्शनी लगी हुई है और इस अवसर पर जोगेन को लेकर एक बड़ी पुस्तक भी प्रकाशित की गई है। 'चित्रकूट गैलरी' में सुपरिचित मूर्तिशिल्पी शर्वरी राय चौधरी की प्रदर्शनी चल रही थी। इसे भी देखने की इच्छा थी, पर जाना संभव नहीं हो सका। मालूम हुआ कुछ ही दिनों पहले चर्चित कलाकार जयश्री चक्रवर्ती की प्रदर्शनी 'गैलरी ८८' में लगी थी और उसने पर्याप्त प्रशंसा बटोरी है। प्रदर्शनी तो समाप्त हो चुकी थी, सो जयश्री के साल्ट लेक स्थित घर-स्टूडियो में उनसे मिलने गया और प्रदर्शनी का कैटलॉग प्राप्त कर लिया।

प्राय: हर कोलकाता यात्रा में जयश्री के यहां जाना होता ही है, उनके काम को देखना भी। पर इस बार उनकी प्रदर्शनी के कारण स्टूडियो में काम न थे। बातचीत थोड़ी देर के लिए ही सही, हुई। कुछ भागते-दौड़ते ही। हां, 'आकार प्रकार' नाम की गैलरी में भी गया, जहां पुराने मित्र सनत कर की प्रदर्शनी लगी हुई है। 'आकार प्रकार' दक्षिण कोलकाता में हिंदुस्तान पार्क में है। इसे मुकुंद लाठ के बेटे अभिजीत चलाते हैं। गैलरी, पुरखों के मकान के निचले हिस्से में है। आंगन और गलियारों समेत पर्याप्त जगह है। ऊपर अभिजीत रहते हैं। यह गैलरी सुरुचिपूर्वक बनाई गई है। मुकुंद जी से तो पुराना परिचय है, पर वयस्क यानी युवा अभिजीत से बातचीत पहली बार हुई। और यह देख कर अच्छा लगा कि सनत कर की प्रदर्शनी के अवसर पर 'आकार प्रकार' ने भी उन पर एक पुस्तक प्रकाशित की है।

सनत कर कोलकाता-शांतिनिकेतन के बीच आते-जाते रहते हैं। १९९३ में एक बार उनसे शांतिनिकेतन में भी मिलना हुआ था, और अभी कोई दो बरस पहले साल्ट लेक स्थित उनके फ्लैट में भी गया था। काम तो बरसों से देखता आ रहा हूं। वह हमारे कुशल ग्राफिक कलाकारों (प्रिंटमेकर) में गिने जाते हैं, जिन्होंने विविध ग्राफिक विधियों में काम किया है। इस बार की बड़ी प्रदर्शनी में उनके रेखांकन, ग्राफिक्स, चित्र- सभी हैं। चेहरों वाले। बगैर चेहरों के भी। कुछ केवल रेखा-संपन्न भी। सरल-सहज और संक्षिप्त ढंग से, सनत कर हमेशा कोई मर्म की बात कहते हैं- कभी मुख-मुद्राओं से, कभी किन्हीं भंगिमाओं से, और कभी आकृति और वस्तुरूपों से रचित रंगों-रंगतों-रेखाओं के सुमेल से। आत्मीयता और सौंदर्यमयता उनकी कला के गुण हैं। 'आकार प्रकार' में जाकर, हर तरह से अच्छा लगा। सनत कर से भेंट इस बार जरूर नहीं हो पाई।

पीआर नरवेकर की एक कृति : कैनवस पर तैल रंग और एक्रिलिक

पुराने मित्रों में जोगेन भी हैं, जिनका काम पिछले दशकों में निरंतर चर्चा में रहा है और उनकी निजी और कई सामूहिक प्रदर्शनियों में खूब प्रदर्शित भी हुआ है। प्रदर्शनी में जोगेन के चित्र और रेखांकन हैं। कुछ लीथोग्राफ-सेटीग्राफ भी। चित्र सभी पेस्टल रंगों और स्याही में कागज पर हैं, आकार प्रकार में प्राय: मंझोले। स्वप्नशील लेटी-पसरी आकृतियां और कुछ कुली या अर्धनिमीलित आंखों वाली मुखाकृतियां और उनके वस्त्रों की सलवटें-डिजाइनें आदि ही जोगेन के चित्रों-रेखांकनों में एक अरसे से उभरती रही हैं। कुछ पुरुष आकृतियां भी थीं, पर अधिकतर में स्त्री-छवि की ही प्रमुखता थी। जोगेन की रेखाओं की बुनावट, काट-पीट और उनका आड़ा-तिरछा होकर एक-दूसरी के बीच से गुजरना, कहीं मोटाई और पैनापन भी धारण कर लेना, और कुल मिलाकर 'कथन' को मर्मभरे ढंग से घेरना- हमेशा ही आकर्षित करने वाले होते हैं।

इस बार के कुछ रेखांकनों-चित्रों में हमारी मूर्तिशिल्पीय धरोहर की कुछ स्मृतियां भी थीं, समकालीन बोध के साथ और जैसी कि स्वयं चित्रकार और कलामर्मी जवाहर गोयल ने टिप्पणी की, 'जोगेन की रेखाएं इस बार 'वाल्यूम' की ओर भी उन्मुख हैं।' देह और मन की सब तरह की स्थितियों को अपनी कला का विषय बनाने वाले जोगेन की सूक्ष्म दृष्टि हमेशा की तरह सक्रिय थी, पर कहीं-कहीं अब भी दोहराव के लक्षण प्रकट होते हैं। अधिकतर काम २००५ और २००६ के ही हैं। कुछ पंद्रह एक साल पुराने भी। कुल मिला कर इस प्रदर्शनी को देखना जोगेन के कला-संसार में कई तरह से झांकने का एक नया अवसर तो था ही।

जयश्री पिछले कई वर्षों से मानो 'पथ और पथिक' को लेकर काम करती रही हैं। सुपरिचित कला समीक्षक प्रणब रंजन राय ने कैटलॉग में यह टिप्पणी ठीक ही की है कि 'जयश्री के चित्र प्रचलित अर्थों में यात्रा-वृत्तांत वाले चित्रों जैसे न होकर यात्राओं की गहरी स्मृतियां हैं, जो विभिन्न छवियों के रूप में प्रकट होती हैं।' जयश्री किसी यात्रा-छवि को पूरा करके नहीं आंकती हैं, और अर्धनिर्मित छवियों को एक-दूसरी के ऊपर बिछाती जाती हैं। सो, कहीं किसी कोने में घर-मकान दिखते हैं, कहीं वनस्पतियां, पेड़-पौधे, खंडहर, मुड़ती पगडंडियां और इन्हीं के बीच कहीं उभर आती है कोई शांत-धीर मुखाकृति।

छवियों के इस उलझे-सुलझे संजाल के बीच उतरना हमेशा ही रुचिकर और सम्मोहक होता है। जयश्री के चित्र कभी मुद्रण में ठीक-ठीक उतरते नहीं हैं, इसलिए उनके चित्रों को मूल में देखने का एक अलग ही स्वाद और सुख है। वैसे तो मूलकृति, मूलकृति ही होती है। पर, कुछ कलाकारों के काम को हम 'रिप्रोडक्शन' में भी सराह पाते हैं। जयश्री जैसी चित्रकार को, अवश्य ही, हम मूल में ही ठीक से पहचान-परख सकते हैं। स्वयं जयश्री ने इस पर अफसोस प्रकट किया कि मुद्रण में उनकी कृतियों के रंग कई बार बदल जाते हैं और कुछ इमेजिज तो उतर ही नहीं पातीं। पर, हंसकर यह भी कहा, 'कभी-कभी चमत्कार हो जाता है। और मुद्रण में चित्र सही-सही भी उतर आते हैं।'

कोलकाता की बिल्कुल नई गैलरी 'आकृति' है। इसे खुले हुए कुल तीन महीने हुए हैं। यह कविता-कला अनुरागी और स्वयं कवि मानिक बच्छावत के छोटे सुपुत्र विक्रम के उद्यम का प्रतिफल है। मानिक मेरे पुराने मित्रों में हैं। विक्रम को भी उसके लड़कपन से देखता आया हूं। उसका यह उद्यम प्रसन्न करने वाला है। पिकासो वीथी (हंगरफोर्ड स्ट्रीट) में स्थित यह गैलरी कोलकाता के मध्य में सेंट जेवियर कॉलेज के पिछवाड़े में है। इसका परिसर भी उन्मुक्त-सा है। और गैलरी की इमारत के सामने कम से कम छह गाड़ियां खड़ी करने की जगह है। इस बात का उल्लेख यही सोच कर कर रहा हूं कि इससे जगह के खुलेपन का कुछ अंदाजा हो सकेगा।

गैलरी प्रथम मंजिल में है। बड़ी है, और विक्रम का इरादा इसके एक हिस्से में मूर्तिशिल्पी गैलरी विकसित करने का भी है, जिस पर इन दिनों काम चल रहा है। गैलरी के ही हिस्से में भूतल का एक बड़ा हॉल भी है, जो सभा-गोष्ठियों के काम भी आ सकता है और किसी प्रदर्शनी के उद्घाटन अवसर पर रिसेप्शन आदि के काम भी। २५ फरवरी को इस गैलरी में पीआर नरवेकर (जन्म १९५०) की प्रदर्शनी का उद्घाटन हुआ। नरवेकर, जेजे स्कूल ऑफ आर्ट के पढ़े हुए विनम्र व्यक्ति और कलाकार हैं। गोवा के हैं। मुंबई में रहते हैं। पारिवारिक परिस्थितियों के कारण- कई तरह की जिम्मेवारियां निभाने के कारण- वह कोई सत्रह वर्षों तक कुछ विशेष नहीं कर सके थे। इधर कुछ वर्षों से पूरी तरह चित्रकला को समर्पित हैं और निश्चय ही ऐसा काम कर रहे हैं जो कुछ चमत्कृत ही करता है। सारवान है। और अपनी चित्र-भाषा में बहुत अलग भी। पानी भरती, छोटे-मोटे घरेलू काम करतीं मध्यवर्गीय और निम्न मध्यवर्गीय स्त्री-पुरुष आकृतियां हैं, कहीं बैठीं, सुस्ताती हुईं भी। बतियाती हुईं भी।

केवल दो रंगों- काले-पीले का इस्तेमाल नरवेकर करते हैं। स्त्री-पुरुष आकृतियों के हाथ-पांव बहुत लंबे करके वह आंकते हैं, जो उन 'छायाओं' की याद दिलाती हैं, जब सुबह-शाम-दोपहर को मानव आकृति किसी खास दिशा में अपनी लंबी छायाएं फेंकती हैं। पर यहां ये लंबायमान आकृतियां एक विशिष्ट लय की सृष्टि करती हुईं, श्रम की गरिमा और साधारण जीवन के सुख-दुख की आत्मीय आभा हम तक पहुंचाती हैं। इनमें गहरी जिजीविषा है। और औसत भारतीय जीवन (शैली) के आत्मिक संतोष, और राज-क्षोभ के साथ प्रकृति और ऋतुओं से ओतप्रोत एक आनंद भी है। इन मनोहारी छवियों की स्मृति देर तक बनी रहने वाली है। नरवेकर से मिलना भी एक सुखद अनुभव था। विक्रम ने उन्हें 'ढूंढ़ा' और कलाप्रेमियों के लिए सुलभ बनाया, इसके लिए निश्चय ही उसे बधाई दी जानी चाहिए। उद्घाटन वाली शाम कोलकाता के कई कलाकारों से भी भेंट हुई।